राष्ट्रीय औषधि वनस्पति

गिलोय की उन्नत खेती

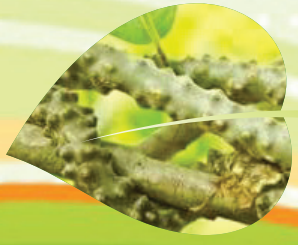

गिलोय की डंडी या तना

गिलोय का फल

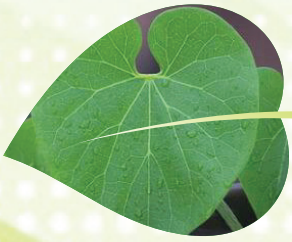

गिलोय का पत्ता

गिलोय की बेल

गिलोय (Giloy) एक दिव्य ओषधि है, जिसे लाखों लोगों ने उपयोग में ला कर कई बिमारियों से छुटकारा पाया है। गिलोय देखने में लगभग पान के पत्ते की तरह होती है। यह लता के रूप में उगती है और बढती है। इसका वैज्ञानिक नाग Tinospora cordifolia है। गिलोय के पत्ते पतले, हरे और दिल आकर के होते हैं। गिलोय के पीछे एक कहानी है जो इस प्रकार हैः जब समुद्र मंथन हुआ तो उससे से अनेक चिजे निकली, जिसमे से की अमृत बहुत ही मूल्यवान थी जो की देवताओं को प्राप्त हुई। परन्तु दानवों ने छल से अमृत प्राप्त कर भागने लगे। भागने के क्रम में जहाँ जहाँ अमृत की बुँदे पृथ्वी पर गिरी, वहां वहां गिलोय पौधे के रूप में प्रकट हुआ, इसलिए इसे अमृत वल्ली भी बोला जाता है।

गिलोय की लता जंगलों, खेतों की मेड़ों, पहाड़ों की चट्टानों आदि स्थानों पर सामान्यतः कुण्डलाकार चढ़ती पाई जाती है। नीम एवं आम के वृक्षों के आस-पास भी यह मिलती है। जिरा वृक्ष को यह अपना आधार बनाती है, उसके गुण भी इसमें समाहित रहते हैं। इस दृष्टि से नीम पर चढ़ी गिलोय श्रेष्ठ औषिधी मानी जाती है। इसका तना छोटी अंगुली से लेकर अंगूठे जितना मोटा होता है। इसमें से जगह- जगह पर जड़ें निकलकर नीचे की ओर झूलती रहती हैं। चट्टानों अथवा खेतों की मेड़ों पर जड़ें जमीन में घुसकर अन्य लताओं को जन्म देती हैं। इसकी बेल की ऊपरी छाल बहुत पतली, भूरे या धूसर वर्ण की होती है, जिसे हटा देने पर भीतर का हरित मांसल भाग दिखाई देने लगता है। काटने पर अन्तर्भाग चक्राकार दिखाई पड़ता है। पत्ते हृदय के आकार के, खाने के पान जैसे, एकान्तर क्रम में व्यवस्थित होते हैं। पत्ते लगभग 2 से 4 इंच तक व्यास के स्निग्ध होते हैं तथा इनमें 7 से 9 नाड़ियाँ होती हैं। पत्र-डण्ठल लगभग 1 से 3 इंच लंबा होता है। फूल ग्रीष्म ऋतु में छोटे-छोटे पीले रंग के गुच्छों में आते हैं। फूल पीले, उभयलिंगी, 2 मिमी से कम आकार के होते हैं। फल पकने पर रक्त के समान लाल हो जाते हैं। बीज सफेद, चिकने, कुछ टेढ़े मिर्च के दानों के समान होते हैं। इसमें फूल मई-जून माह में आते हैं और सितंबर-अक्टूबर में फलन होता है। यह भारत की स्थानीय प्रजाति है। समुद्र तल से 600 मी. ऊँचाई तक भी पायी जाती है।

औषधीय उपयोग

इसे विभिन्न नामों से जाना जाता है जैसे की- गुडूची (Guduchi), जीवन्तिका (Jivantika), अमृत वल्ली (Amrit Walli), अमृत वेल (Amrit Vel) मधुपर्णी (Madhuparni), मधुकपर्णी (Madhukparni), गुलवेल (Gulvel), गलो (Galo), चनांगी (Chanangi) ई।

गिलोय का उपयोगी भाग इसका तना, जड़ और पत्ते होते है, गिलोय एक लिवर टॉनिक है और इसमें मूत्रवर्धक और कामोद्दीपक गुण होते हैं। यह मलेरिया और जीर्ण ज्वर में प्रयुक्त होने वाला लता पादप है। इसका उपयोग सामान्यतः दुर्बलता, शूण, बुखार, गूत्र विकार, मधुमेह, गठिया और अपच में किया जाता है। आयुर्वेद साहित्य में इसे ज्वर की महान औषधि माना गया है एवं जीवन्तिका नाम दिया गया है। इसके ताजे पौधे, सूखे पौधे की तुलना में अधिक प्रभावी होते हैं।

कृषि तकनीक

यह सभी प्रकार की जलवायु में हो जाता है लेकिन यह गर्म और नमीयुक्त जलवायु में अधिक वृद्धि करता है। गिलोय या रोपण बीज और कटिंग दोनों से किया जा सकता है बीजों का अंकुरण क्षमता कम होनेसे इसे ज्यादातर कटिंग के माध्यम से ही रोपा जाता है। गिलोय की खेती के लिए खेत में मेड़ बाड़, पोल या बड़े पौधे का सहारा लेना चाहिए या खेत में लता को चलने में आसानी हो।

फसल किस्म

गिलोय की कुछ किस्मे वियकसीट की गई है जिसमे अमृतवल्ली, सातवा, गिलोयसत्व, सत्तगिलो, सेंथिल कोडी यह आधिक उत्पादन देने वलि है साथ ही उसमे औषधीय गुण भी अच्छे प जाते है ।

खेत की तैयारी

गिलोय की खेती के लिए मिट्टी का समतल और भुरभुरा होना जरूरी है. इसके लिए शुरुआत में खेत की तैयारी के वक्त खेत की मिट्टी पलटने वाले हलों से गहरी जुताई कर उसे कुछ दिनों के लिए खुला छोड़ दें. इस की खेती में जैविक खादों एंव उर्वरकों का इस्तेमाल करना चाहिए, जैविक खाद जैसे की-

- **केचुवे का खाद/ वर्मिकोमपोस्ट** : पौधे के लिए पोशाक तत्व प्रदान कर्ता है,
- **नीम की खली** : जमीन में उपस्थित किटकों को मारता है,
- **जिप्सम पाउडर** : जमीन को भुरभुरा रखने में मदद करता है, और
- **ट्रायकोडर्मा फफूंद नाशक पाउडर** : जो जमीन में उपस्थित हानिकारक फफूंद को मारने में उपयोगी होता है।

ये चारों खाद नीचे बताए गए विधि से जमीन तयार करते समय खेत में फैलाने है।

खेत की जुताई के बाद खेत में पानी चलाकर खेत का पलेव कर दें. पलेव करने के बाद जब मिट्टी हल्की सुखी हुई दिखाई दे तब खेत की फिर से कल्टीवेटर के माध्यम से जुताई कर उसमें रोटावेटर चला दें. इससे खेत की मिट्टी भुरभुरी दिखाई देने लगती है. मिट्टी को भुरभुरा बनाने के बाद खेत को समतल बना लें. खेत को समतल बनाने के बाद पौधों की रोपाई के हिसाब से खेत में क्यारी और मेड़ों का निर्माण किया जाता है

पौधशाला (नर्सरी) की तैयारी और बुवाई

अच्छे सशक्त और जल्दी बढ़ने वाले पौधों से 15- 20 से.मी. लंबाई की 4-5 आंखो वाली उंगली से थोड़ी मोटी शाखाओं के टुकड़ों का इस्तेमाल करे, इन टुकड़ों को मई-जून माह में लगाकर पौधशाला (नर्सरी) की तैयारी करनी चाहिए। इसमें कलम लगाते वक्त रेज्ड बेडस या पालीथीन बैग का प्रयोग करना चाहिए कलम के निचले हिस्सो को रूटेक्स पाउडर के घोल में 15-20 मिनट डुबोकर रखने के बाद लगाना चाहिए पौधशाला का छाया में होना जरूरी होता है, इसके अलावा पौधशाला में एक दिन छोड़कर दूसरे दिन सिंचन करना चाहिए 30-45 दिन बाद पौधे स्थानांतरण योग्य हो जाते हैं कृषि योग्य भूमि में खेती करते वक्त दो पौधे और कतार में 120-150

से.मी. का अंतर रखना चाहिए इस फसल को अतिरिक्त खाद देने की आवश्यकता होती है। इससे पौधे की वृद्धि में तेजी आती है।

सिंचाई

ब्राह्मी के पौधों को सिंचाई की ज्यादा जरूरत होती है. क्योंकि इसके पौधे गीली मिट्टी में अच्छे से विकास करते हैं. लेकिन शुरुआत में पौधों को विकास करने के लिए सामान्य आद्रता की ही जरूरत होती है. इसके पौधों की रोपाई के तुरंत बाद सिंचाई कर देनी चाहिए. उसके बाद इसके पौधों के अच्छे से विकसित होने तक मिट्टी में उचित नमी बनाए रखे. इसके पौधों को विकास करने के लिए नमी की अधिक जरूरत होती है. इसलिए जब इसके पौधे अच्छे से विकास करने लगे तब पौधों को पानी अधिक मात्रा में देना चाहिए.

फसलोत्पादन तकनीक (Harvesting Technique)

पत्तों की कटाई : यद्यपि इसके तने को मुख्य रूप से औषधि हेतु उपुयक्त माना जाता है परन्तु इसकी पत्तियों के सम्बन्ध में बाजार में जानकारी कर इन्हें तोड़ना भी व्यापारिक रूप में उत्तम रहता है। परन्तु यह ध्यान रखना होगा कि इसकी पत्तियाँ तोड़ते समय बेल को कोई नुकसान नहीं पहुँचे। पौधा लगने के 3-3 महीने पश्चात् तथा बाद में 2 माह के अन्तराल पश्चात् पत्तियों को तोड़ा जा सकता है, इस प्रकार से एक साल में पत्तों की चार बात कटाई की सकती है। इन हरी पत्तियों के साफ व सूखे फर्श पर सुखाया जाता है जो एक सप्ताह में सूख जाती है। तत्पश्चात् इन्हें पालीथिन लाईनिंग वाली बोरियों में भरकर बाजार विक्रय हेतु भेजा जा सकता है। औसत रूप से एक एकड़ खेत में एक वर्ष में 2000 कि.ग्रा. सूखी पत्तियाँ एकत्रित होती है।

डंठल की कटाई : पतझड़ में जब इसकी पत्तियाँ झड़ना शुरु हो जायें तब इस पूरी बेल को जमीन से एक फुट ऊपर हंसिए से काटकर पूरी लता को इकट्ठा कर लिया जाता है। गिलोय के तने की मोटाई 3-4 इंच व्यास के बराबर होती है इसे छोटे-छोटे टुकड़ों में कटाई के बाद पौधे को छोटे टुकड़ों में काटकर छाया में सुखाया जाता है। इन्हें थैलों में संग्रहित किया जा सकता है, और हवादार गोदाम में भंडारण किया जा सकता है। इसका तना ही गुड़ची/ गिलोय के रूप में बाजार में बिकता है एक बार काट देने के बाद वर्षा में यह पुनः नये सिरे से बेल उगने लग जाती है। यदि कुछ पौधे नये नहीं बने तो उनकी जगह नये पौधे लगाने चाहिये। इससे गिलोय का उत्पादन प्रति एकड़ 9 क्विंटल होता है।

पैकिंग

सुखाई गई सामग्री को वायुरोधी पालीथीन के थैलो में पैक किया जाता है।

भंडारण

पैक सामग्री को ठंडे और शुष्क कमरे में रखना चाहिए।

भंडारण के दौरान सामग्री की रक्षा कीट और पतंगों से करना चाहिए।

प्रति एकर कुल खर्चे (चार साल)

क्रमांक	ब्योरे	विवरण	रकम/ उत्पादन
1	बीज	10,000 कटिंग प्रति एकर रु.10/- प्रति किलो	1,00,000/-
2	जैविक खाद	वर्मीकम्पोस्ट खाद, नीम की खल, ट्राइकोडर्मा पाउडर और जिप्सम	10,000/-
3	रोपाई और निंदाई गुड़ाई	पौध लगाना, खरपतवार निकालना	5,000/-
4	अन्य खर्चे	जमीन तैयार करना, लेबर, पानी, बिजली, कटाई और सुखाना	8,000/-
5	कुल खर्चे	(प्रति एकर)	1,23,000/-

प्रति एकर कुल आय

	प्रथम वर्ष	द्वितीय वर्ष	तृतीय वर्ष	चौथे वर्ष	कुल उत्पादन	बायबैक कीमत	रक्कम/ आय
सूखे डंठल	1000 किलोग्राम	1000 किलोग्राम	1000 किलोग्राम	1000 किलोग्राम	4000 किलोग्राम	रु.30 प्रति किलोग्राम	रु.1,20,000/-
सूखे पत्ते	2000 किलोग्राम (चार बार कटाई से)	2000 किलोग्राम (चार बार कटाई से)	2000 किलोग्राम (चार बार कटाई से)	2000 किलोग्राम (चार बार कटाई से)	8000 किलोग्राम	रु.20 प्रति किलोग्राम	रु.1,60,000/-
कुल आय (चार साल)							**रु.2,80,000/-**
कुल खर्चे (चार साल)							**रु.1,35,000/-**
कुल शुद्ध आय (चार साल)							**रु.1,57,000/-**

अधिक जानकारी हेतु संपर्क करे

मोबाइल : 97850-15005, 98875-55005, 81073-79410, 83291-99541, 96100-02243, 78919-55005

ईमेल : • atul.hcms@gmail.com, • info@iiaasd.com, • organic.naturaljpr@gmail.com, • info@sunriseagriland.com, sunriseagrilandb2b@gmail.com

वेबसाइट : • www.hcms.org.in, • www.iiaasd.com, • www.sunriseagriland.com

महत्वपूर्ण लिंक्स : • https://www.hcms.org.in/ofpai.php, • https://www.hcms.org.in/sunrise-organic-park.php • https://www.hcms.org.in/mai-hu-kisan.php • https://www.hcms.org.in/organic-maures-and-pesticides.php

Organic SUNRISE™ Natural

OFPAI Organic Farmer Producer Association of India

(IIAASD)

हैनीमैन चेरीटेबल मिशन सोसायटी

JKM Organic & Herbs Pvt. Ltd.

Sunrise Organic PARK